समय की समीपता के नजारे

वैसे ही आप सभी को भी एक दो के यह तीनों रूप देखने में आयेंगे। अभी यथायोग्य, यथाशक्ति है। लेकिन कुछ समय बाद यह यथा शक्ति शब्द भी खत्म हो जायेगा। और हरेक अपने अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त हो जायेंगे। तो बापदादा आप सभी के सम्पूर्ण मुखड़े देखते हैं। सम्पूर्णता नम्बरवार होगी। माला के 108 मणके जो हैं, तो नम्बर वन मणका और एक सौ आठवाँ मणका दोनों को सम्पूर्ण कहेंगे कि नहीं? विजयी रत्न कहेंगे? विजयी रत्न अर्थात् अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त हो। उनके लिए सारे ड्रामा के अन्दर वही सम्पूर्णता की फर्स्ट स्टेज है। जैसे सतयुग में विश्व महाराजन् तो 8वाँ भी कहलायेगा लेकिन फर्स्ट विश्व-महाराजन् की सृष्टि के सम्पूर्ण सुख और 8वें के सम्पूर्णता के सुख में अन्तर होगा ना। वैसे ही यहाँ भी हरेक अपने-अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त हो रहे हैं। इसलिए बापदादा सम्पूर्ण स्टेज को देखते रहते और वर्तमान समय के पुरुषार्थ को देखते रहते हैं। क्या हैं और क्या बनने वाले हैं।

(22.01.1970)

परीक्षाएं बहुत आनी हैं। पेपर तो होने ही हैं। जैसे-जैसे अन्तिम फाइनल रिजल्ट का समय समीप आ रहा है वैसे समय-प्रति-समय प्रैक्टिकल पेपर स्वत: ही होते रहते हैं। पेपर प्रोग्राम से नहीं लिया जाता। आटोमेटिकली ड्रामा अनुसार समय प्रति समय हरेक का प्रैक्टिकल पेपर होता रहता है। तो पेपर में पास होने की हिम्मत अपने में समझते हो? घबराने वाले तो नहीं हो ना? अंगद के माफिक जरा भी अपने बुद्धियोग को हिलाने वाले नहीं हो?

(12.07.1972)

अभी तो ऐसे पेपर्स आने वाले हैं जो स्वप्न में, संकल्प में भी नहीं होगा। प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए जैसे हद का ड्रामा साक्षी हो देखा जाता है। फिर चाहे दर्दनाक हो वा हंसी का हो, दोनों पार्ट को साक्षी हो देखते हैं, अन्तर नहीं होता है क्योंकि ड्रामा समझते हैं। तो ऐसी एकरस अवस्था होनी चाहिए। चाहे रमणीक पार्ट हो, चाहे कोई स्नेही आत्मा का गम्भीर पार्ट भी हो तो भी साक्षी होकर देखो। साक्षी दृष्टा की अवस्था होनी चाहिए। घबराई हुई या युद्ध करती हुई अवस्था ना हो। कोई घबराते भी नहीं हैं, युद्ध में लग जाते हैं। जरुर कुछ कल्याण होगा। लेकिन साक्षी दृष्टा की स्टेज बिल्कुल अलग है। इसको ही एकरस अवस्था कहा जाता है।

(19.09.1972)

कई आत्माएं बहुत अच्छे हुल्लास, उमंग, हिम्मत और बाप के सहयोग से बहुत आगे मंजिल के समीप तक पहऊँच जाती हैं, लेकिन 63 जन्मों के हिसाब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। अपने पिछले संस्कार, स्वभाव बाहर इमर्ज ही, सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं, उस कर्मों की गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं - क्या लास्ट तक यही चलेगा? अब तक भी यह टक्कर क्यों होता? इन व्यर्थ संकल्पों की उलझन के कारण प्यार नहीं कर पाते। सोचने में ही टाईम वेस्ट कर देते हैं और कोटों में कोई तूफानों को भी ड्रामा का तोफ़ा समझ स्वभाव संस्कारो की टक्कर को आगे बढ़ने का आधार समझ, माया को परखते हुए पार करते, सदा बाप को साथी बनाते हुए, साक्षी हो हर

पार्ट देखते, सदा हर्षित हो चलते रहते। सदैव यह निश्चय रहता है कि अब तो पहऊँचे। तो बाप इतने प्रकार की लीला बच्चों की देखते हैं।

(03.05.1977)

साक्षी होकर सर्व आत्माओं का अपना-अपना पार्ट देखते हुए कोई भी पार्ट को देख, ऐसा क्यों की हलचल होती है? महारथी और घोड़े सवार दोनों का विशेष अन्तर यही है। घोड़े सवार की निशानी क्या होगी? क्वेश्चन मार्क (प्रश्न चिन्ह) और महारथियों की निशानी होगी फुल स्टॉप (पूर्ण विराम) जैसे कोई भी सेना होती है तो उसमें फर्स्ट नम्बर है, यह सेकेण्ड है, उसकी निशानी होती है। फिर उनको मैडल मिलता है जिससे मालूम पड़ जाता है कि यह फर्स्ट, यह सेकेण्ड है। तो अनादि ड्रामा में रूहानी सेना के सेनानियों को कोई मैडल नहीं देता है लेकिन ऑटोमेटीकली (स्वत) ड्रामानुसार उन्हों को स्थिति रूपी मैडल प्राप्त हो ही जाता है। कोई मैडल लगाता नहीं है - स्वत: ही लगा हुआ होता है। तो सुनाया कि महावीर का मैडल होगा - फुल स्टाप। स्टाप भी नहीं फुल स्टाप। और सेकेण्ड नम्बर अर्थात् घोड़े सवार की निशानी - कब स्टाप, कब क्वेश्चन। विशेष निशानी क्वेश्चन की होगी। इससे ही समझना चाहिए कि किस स्टेज वाली आत्मा है। यह निशानी ही मैडल है। स्पष्ट दिखाई देता है न? दिन-प्रतिदिन हरेक आत्मा अपना स्वयं ही साक्षात्कार कराती रहती। न चाहते हुए भी हरेक की स्टेज प्रमाण स्थिति दिखाई देती जा रही है। सरकमटेंसस (परिस्थिति) ऐसे आयेंगे, समस्याएं ऐसी उन्हों के सामने आयेगी जो न चाहते हुए भी स्वयं को छिपा नहीं सकेंगे। क्योंकि अब जैसे समय समीप आ रहा है तो समीप समय के कारण माला स्वयं ही अपना साक्षात्कार करायेगी। स्थिति अपना नम्बर आटोमेटीकली प्रसिद्ध करती जा रही है।

(19.05.1977)

कमज़ोरी बहुत समय की होती, लेकिन अभी छिप नहीं सकते। पहले अन्दर-अन्दर गुप्त कमज़ोरी चलती रहती, अभी समय नजदीक आ रहा है। इसलिए कमज़ोरी छिप नहीं सकती। राजा बनने वाला, प्रजा पद वाले, कम पद पाने वाले, सेवाधारी बनने वाले, सब अभी प्रत्यक्ष होंगे। अन्त में जो साक्षात्कार कहा है, वह कैसे होगा? यह साक्षात्कार करा रहे हैं। बाकी ऐसे नहीं है, कमज़ोरी नहीं थीं अब हुई है - लेकिन अब प्रसिद्ध रूप में चान्स मिला है। जैसे समाप्ति के समय सब बीमारी निकलती, वैसे समाप्ति का समय होने के कारण हरेक की वैरायटी कमज़ोरियां प्रत्यक्ष होंगी। अभी तो एक लहर देखी है और भी कई लहरें देखेंगे। अति में जाना जरूर है, अति हो तब तो अन्त हो। जो भी अन्दर कमज़ोरियां हैं, अन्दर छिप नहीं सकती, किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष रूप में आएगी, लेकिन आपकी भावना रहे कि - इन सबका भी कल्याण हो जाए। आप वरदानी हो तो आपका हर संकल्प, हर आत्मा के प्रति कल्याण का हो। लहरें तो और भी आएगी एक खत्म होगी, दूसरी आएगी, यह सब मनोरंजन के बाइप्लाटस हैं। और पद भी स्पष्ट हो रहे हैं। यह होते रहेंगे। आश्चर्यवत् सीन होनी चाहिए। एक तरफ नए-नए रेस में आगे दिखाई देंगे। दूसरे तरफ थकने वाले, रुकने वाले भी प्रसिद्ध होंगे। तीसरे तरफ जो बहुत समय से कमज़ोरियाँ रही हुई हैं, वह भी प्रत्यक्ष होगी। नथिंग न्यू हैं, लेकिन रहम की दृष्टि और भावना दोनों साथ हों। अच्छा।

(25.06.1977)

यह वर्ष विदाई और बधाई का है और इस वर्ष में विशेष जो बच्चों ने संकल्प किया है, वह प्रैक्टिकल में करने वालों को बापदादा की एक्स्ट्रा मदद भी मिलेगी। सिर्फ दृढ़ रहना। बीच-बीच में ड्रामा पेपर लेगा लेकिन संकल्प में दृढ़ रहना, संकल्प रूपी पांव हिले नहीं, अचल रहे तो बापदादा द्वारा एक्स्ट्रा मदद की अनुभूति होगी। सिर्फ लेने की

शक्ति चाहिए। एक बल, एक भरोसा.. कुछ भी हो जाए, बनना ही है। यह संकल्प रूपी पांव मजबूत रखना। तो बातें आयेंगी भी लेकिन ऐसे ही अनुभव करेंगे जैसे प्लेन में बादल नीचे रह जाते हैं और स्वयं बादलों के ऊपर रहते हैं। बादल एक मनोरंजन का दृश्य बन जाता है। ऐसे कितने भी काले बादलों जैसी बातें हों, जिसमें कुछ समस्या का हल या समाधान उस समय दिखाई न भी दे लेकिन यह दृढ़ निश्चय हो कि यह बादल आये हैं जाने के लिए। यह बादल बिखरने वाले ही हैं, रहने वाले नहीं हैं। ऐसे उड़ती कला की स्टेज पर स्थित हो जाओ तो कितने भी गहरे काले बादल बिखर जायेंगे और आप दृढ़ता के बल से सफल हुए ही पड़े हैं। घबराओ नहीं, यह कैसे होगा! अच्छा होगा, क्योंकि बापदादा जानते हैं जितना समय समीप आ रहा है उतना नई-नई बातें, संस्कार, हिसाब-किताब के काले बादल आयेंगे। यहाँ ही सब चुक्तू होना है। कई बच्चे कहते हैं कि दिन-प्रतिदिन और ही ऐसी बातें बढ़ती क्यों हैं? जिन बच्चों को धर्मराजपुरी में क्रास नहीं करना है, उन्हों के संगम के इस अन्तिम समय में स्वभाव-संस्कार के सब हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। धर्मराजपुरी में नहीं जाना है। आपके सामने यमदूत नहीं आयेंगे। यह बातें ही यमदूत हैं, जो यहाँ ही खत्म होनी हैं इसीलिए बीमारी बाहर निकलकर खत्म होने की निशानी है। ऐसे नहीं सोचो कि यह तो दिखाई नहीं देता है कि समय समीप है और ही व्यर्थ संकल्प बढ़ रहे हैं! लेकिन यह चुक्तू होने के लिए बाहर निकल रहे हैं। उन्हों का काम है आना और आपका काम है उड़ती कला द्वारा, सकाश द्वारा परिवर्तन करना। घबराओ नहीं। कई बच्चों की विशेषता है कि बाहर से घबराना दिखाई नहीं देता है लेकिन अन्दर मन घबराता है। बाहर से कहेंगे नहीं-नहीं, कुछ नहीं। यह तो होता ही है लेकिन अन्दर उसका सेक होगा। तो बापदादा पहले से ही सुना देता है कि घबराने वाली बातें आयेंगी लेकिन आप घबराना नहीं। अपने शस्त्र छोड़ नहीं दो। जो घबराता है ना तो जो भी हाथ में चीज़ होती है वह गिर जाती है। तो जब यह मन में भी घबराते हैं ना तो शस्त्र व शक्तियां जो हैं वह गिर जाती हैं, मर्ज हो जाती हैं। इसीलिए घबराओ नहीं, पहले से ही पता है। त्रिकालदर्शी बनो, माया से निर्भय बनो। संबंध में तो स्नेह और निर्माण। कोई कैसा भी हो आप दिल से स्नेह दो, शुभ भावना दो, रहम करो। निर्माण बन उसको आगे रख आगे बढ़ाओ। जिसको कहा जाता है कारण रूपी निगेटिव को समाधान रूपी पॉजिटिव बनाओ। यह कारण, यह कारण, यह कारण... कारण वा समस्या को पॉजिटिव समाधान बनाओ।

(14.12.1997)